नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

भारत-मॉरिशस के बीच सांस्कृतिक रिश्ता- डॉ. सरिता बुधू

हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

कोलकाता 6 फरवरी 2019: भारत और मॉरीशस के बीच खून का रिश्ता है। दोनों देशों में कई सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषायी सहकारिता रही है। इन्ही मुद्दों को लेकर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कोलकाता केंद्र में 5 फरवरी को एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'भारत और मॉरीशस : सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि मॉरीशस की कला एवं संस्कृति

मंत्रालय की डॉ. सरिता बुधू शामिल हुई। उन्होंने मॉरीशस में हिंदी और भोजपुरी भाषा के परिदृश्य को बताते हुए भोजपुरी भाषा के साथ होने वाले संघर्ष को भी साझा किया। उन्होंने अपनी भाषा संस्कृति और समाज को बचाने के लिए आगे बढ़ कर काम करने की अपील की। इस दौरान लेखक, कवि एवं पुलिस महानिदेशक (होमगार्ड) मृत्युंजय कुमार सिंह ने अपनी गंवई संवेदना और शहरी शहरी जीवन पर अपनी बात रखी। उन्होंने मॉरिशस के भारतीय मूल के लोगों पर गौरवान्वित होते हुए कहा कि उन्होंने एक सुंदर सुनियोजित देश को बनाया। उन्होंने कहा कि सत्तर वर्ष में मॉरीशस के लोगों ने अपने देश को प्रतिष्ठा दी है। मॉरीशस को बनाने में भारत से गए अप्रवासी लोगों ने जितने संघर्ष किये उनके दर्द को बताते हुए उन्होंने कहा कि उनकी व्यथा इतिहास में नहीं बल्कि साहित्य के जरिये पढ़ना जरूरी है। इस दौरान मॉरीशस के कई साहित्यकारों की चर्चा करते हुए

उन्होंने कहा कि वहाँ भी उन्होंने एक प्रेमचंद को जीवंत किया है। इस बीच मॉरीशस में गाए जाने

वाले भोजपूरी गानों के बोल से हॉल गूंज उठा। संगोष्ठी में शिक्षाविद एवं पूर्व राज्य सभा सांसद प्रो.

चंद्रकला पांडेय ने मॉरीशस में भोजपुरी के सम्मान की बात करते हुए कहा कि जिस भाषा को भारत में लोग गंवई गंवार की भाषा कहते हैं, वह मॉरीशस की प्रमुख भाषा है। संगोष्ठी के आयोजक व केंद्र प्रभारी डॉ सुनील कुमार 'सुमन' ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भाषा से संस्कृति जीवित

रहती है। उन्होंने मॉरीशस में भारतीय संस्कृति के साथ भोजपुरी भाषा को लेकर किये जा रहे कार्य की सराहना की। केंद्र के सहायक संपादक राकेश श्रीमाल ने इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता काजी नजरुल विश्वविद्यालय आसनसोल के कला संकाय के डीन प्रो. विजय कुमार भारती ने की। इस दौरान कोलकाता, शांतिनिकेतन, वर्धमान, वर्धा से आये प्राध्यापकों और शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कार्तिक चौधरी ने किया तथा आभार केंद्र के शोध छात्र संदीप कुमार दुबे ने माना।